धर्म जीवन

अप्रैल 2007

- देवात्मा क्या चाहते हैं?
- देव धर्म की असल पूंजी
- मृत्यु से जीवन की ओर
- क्या औरत होना अभिशाप है?
- कल्याण सत्संग से लाभ
- धर्म का कैसा सम्मोहन
- शुभ संग्राम

देवात्मा क्या चाहते हैं?

मुझे सच्चे विश्वासी, उत्साही, या जोशीले, खुशदिल और जानदार शख्सों की ज़रूरत है, न कि सच्चे विश्वास से खाली, मुर्दादिल, निरुत्साही और बेजान शख्सों की।

जिन लोगों की रग रग में दुनिया-परस्ती रच गई हो, जिन के भीतर सच्चाई के लिए कोई प्यार और झूठ के लिए कोई नफरत न हो, जो ऐसे आला प्यार और आला नफरत से बिल्कुल खाली हों, जिन के अन्दर सच्चाई का साथ देने के लिए हिम्मत न हो, और झूठ और पाप पर ज़ोरदार हमला करने की जुर्रत न हो, जो इन बातों के विचार से बिल्कुल खोखले, मुर्दादिल, और बेजान हों, जिन के अन्दर कोई पाक जोश और उत्साह न हो, जो सच्चाई और भलाई की जय पर विश्वास न रखते हों, या न कर सकते हों..... जो क्या देवात्मा और क्या देव समाज दोनों के सम्बन्ध में कोई हितकर भाव न रखते हों, जो सच्ची श्रद्धा और दीनता से खाली हों, जो आत्मबल उत्पादक कोई भी सच्चा निज का साधन न कर सकते हों, जो सच्चाई और भलाई का राज लाने के लिए अपने भीतर कोई जोश न रखते हों, और उन की जय के लिए खूब उत्साह और जोश से काम न कर सकते हों, जो प्रार्थनाशील न हों, और महज़ अपनी ताकत पर फूलते और भरोसा करते हों, जिस के चेहरे को देख कर यह असर न पड़ता हो, कि वह कोई ऐसे जानदार आदमी हैं कि जो किसी किस्म के झूठ और किसी किस्म की बुराई को दूर करने के ख्वाहिशमंद हैं, और उन्हें दफा या नष्ट करने के लिए संग्राम कर सकते हैं, और उन पर फतह पाने के लिए हर किस्त की दिक्कत या तकलीफ अपने सिर पर लेने के लिए तैयार हैं। जो डरपोक हों, बुज़दिल हों, आरामतलब हों, जो पड़े रहना और मेहनत से जी चुराना और पाक मुकाबला से पीठ दिखाना पसंद करते हों, और झूठ और बुराई पर हमला करने से कतराने वाले हों, जो अपना यह मोटो न रखते हों कि "फ़तह या मौत" कामयाबी या मौत, जो निरुत्साही और बेजान हों, वह लोग देव समाज के प्रचार विभाग में काम करने के लायक नहीं समझे जा सकते, और ऐसे शख्सों की हमें जरूरत नहीं।

धर्म जीवन

खण्ड 19 अंक 4
अप्रैल 2007
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

देव धर्म की असल पूंजी

देव धर्म की असल पूंजी क्या है? देव धर्म की असल दौलत या पूंजी या खजाना क्या है? इस सच्चाई को प्रत्येक सेवक के लिए जानना बहुत ही आवश्यक है। हमारा सब का ध्यान इस ओर गम्भीरतापूर्वक जाना चाहिए।

क्या देव धर्म की कीमती सम्पति, उसके विशाल भवन, इसके मन्दिर, इसके स्कूल, कालिज और अन्य संस्थाएं, इसके धन के भण्डार इसकी असल पूंजी या दौलत है?

देव धर्म की असल दौलत को समझने से पहले यह निर्णय करना बहुत आवश्यक है, कि देव धर्म का असल लक्ष्य या मुख्य कारज क्या है? देव धर्म का मुख्य लक्ष्य मरती हुई रूहों को बचाना है। रोगी रूहों को शिफा देकर उनको जीने के मार्ग पर डालना है। जो वस्तु या पदार्थ इस लक्ष्य की सिद्धि के लिए मूल रूप से सहायक वा कारगर होता है, वही देव धर्म की असल पूंजी है।

देव धर्म के परम पूजनीय बानी ने इसके सम्बन्ध में फरमाया है :- "परिषद, कर्मचारी, पुस्तकें, समाचार पत्र, साधन आश्रम, नाना विद्यालय, भिन्न-भिन्न धन भण्डार, विधवा आश्रम, सेवा समितिएं .....आदि संस्थाएं उपरोक्त उद्देश्य की सिद्धि के लिए केवल सहाय स्वरूप है।"

उक्त सब वस्तुएं वा अस्तित्व देव धर्म के नाम को तो बढ़ाते हैं, परन्तु वह आप देव धर्म का काम नहीं कर सकते।

देव धर्म का मुख्य लक्ष्य मरती हुई रोगी रूहों के रोगों को मिटाकर, उनको स्वास्थ्य प्रदान करना है, अर्थात् मौत की राह से हटाकर जीने के राह पर डालना है। नीच जीवन आत्मिक रोग पैदा करता है और आत्मा को नाश की ओर ले जाता है। उच्च जीवन से आत्मा की रक्षा होने लगती है और उसका विकास होता है। देव धर्म का मुख्य कारज नीच जीवन को मिटाने का है और उच्च जीवन को पैदा करने का है। अब हमने यह देखना है कि वह कौन सा विशेष पदार्थ है, जिससे नीच जीवन को मिटाने का और उच्च जीवन को पैदा करने का विचित्र कारज हो सकता है।

परम पूजनीय सत्गुरु देवात्मा के लासानी धर्म जीवन के लासानी प्रभाव, केवल और केवल यह महा कठिन, महा आवश्यक और महा हितकर कारज कर सकते हैं। संसार का कोई और पदार्थ पापी हृदयों को बदलने का कारज नहीं कर सकता। यहां यह बात भी साफ करने की आवश्यकता है कि जैसे शिक्षा प्राप्त जन ही किसी को शिक्षित कर सकता है, उसी प्रकार

अपने उच्च जीवन की सीमा तक कोई उच्च व्यक्ति, किसी भले और अधिकारी जन का किसी अंश हित कर सकता है। किसी पाप वा बुराई को दूर करने में सहायक हो सकता है। परन्तु देव जीवन प्राप्त देवात्मा के भिन्न न कोई जन आत्म रोग और आत्म मृत्यु दिखा सकता है और न ही उस रोग और आत्म नाश से किसी अधिकारी जन को योग्यता अनुसार बचा सकता है।

अब यह बात स्पष्ट है कि नीच जीवन मिटाने का और योग्यता अनुसार अधिकारी जनों के भीतर उच्च जीवन पैदा करने का महा कठिन कारज केवल और केवल देव प्रभावों के द्वारा ही हो सकता है। देव धर्म का इतिहास इस कारज की अद्वितीय घटनाओं से भरा हुआ है। देवात्मा सत्गुरु की अद्वितीय तासीरों वा देव प्रभावों में बैठने वाले मनुष्यों के जीवनों में चमत्कारी परिवर्तन ही क्या पहले और क्या अब देव धर्म का असल कारज है। इसके साथ यह सच्चाई स्पष्ट हो जाती है कि देव धर्म की असल पूंजी देवात्मा सत्गुरु के महा दुर्लभ देव प्रभाव या उनके देव जीवन की अद्वितीय तासीरें ही हैं। देव प्रभावों के भिन्न देव धर्म की और कोई असल पूंजी नहीं। यही बहु कीमती दौलत ही देव धर्म का असल खजाना है। इसी दौलत से देव धर्म या धर्म समाज अमीर होता है। हरी भरी होती है। लहलहाती है, खुशहाल होती है। इस अद्वितीय दौलत के वर्तमान होने पर उक्त सब वस्तुएं, भवन, मन्दिर, स्कूल कॉलेज, धन भण्डार, साहित्य आदि मनुष्य की परछाई की तरह पीछे-पीछे आते हैं। इस दौलत से देव धर्म वा धर्म समाज जीवित रहती है और इसकी अर्वतमानता में कुम्हलाने, मुरझाने वा कमजोर होने लगती है।

जिस प्रकार पानी खेती के लिए मूल वा असल पदार्थ है उसी प्रकार देव तासीरें वा देव प्रभाव मनुष्य जीवनों में नीच जीवन मिटाने वा उच्च जीवन को पैदा करने के लिए मुख्य वा मूल वस्तु है।

देव प्रभाव वा देव तासीरें क्या हैं? यह देवात्मा के सर्वोच्च देव जीवन में से निकलने वाली रूहानी रोशनी और रूहानी तेज के साथ संयुक्त अति सूक्ष्म लहरें है। उक्त रोशनी और तेज पापी वा रोगी रूहों के लिए दुर्लभ अमृत है। साक्षात अनुभव होने से अर्थात् देव प्रभावों के प्राप्त होने से अपने भीतर आए परिवर्तन द्वारा देव प्रभावों के होने का विश्वास पैदा होता है।

इस सत्य के निश्चित होने पर कि देव प्रभाव ही देव धर्म की असल दौलत है, यह सिद्ध होता है, कि जो जन उक्त देव प्रभाव प्राप्त करने और आगे अधिकारी जनों के भीतर संचार करने की योग्यता रखते हैं, वह जन ही देव धर्म की असल दौलत है। जब देव धर्म के भीतर ऐसे जनों की अधिक से अधिक वर्तमानता होती है या रही है, तब तब देव धर्म का कारज बढ़ा है, फैला है, धर्म समाज अधिकारी जनों से भरपूर रही है। धन पदार्थ भी स्वभाविक बढ़े हैं। जब किसी भी कारण से उपरोक्त योग्यता रखने वाले जन घट जाते हैं, लोप हो जाते, तब उससे देव धर्म का धर्म समाज का कंगाल होता जाना स्वभाविक हो जाता है। देव प्रभावों का वातावरण लोप हो जाता है वा केवल लफजी कार्यवाही प्रधान हो जाती है। नीच जीवनों में परिवर्तन आने बन्द हो जाते हैं। धर्म समाज का मुख्य कार्य बन्द हो जाता है। या बहुत सीमा तक रुक जाता है। जैसे पानी के बिना सारी खेती का रंग रूप बिगड़ जाता है, उसी प्रकार देव प्रभावों की अर्वतमानता से धर्म समाज का सम्पूर्ण रंग रूप वा ढांचा बिगड़ कर और का और रंग धारण कर लेता है।

अगला प्रश्न यह उठता है कि धर्म समाज में देव प्रभावों की प्राप्ति की योग्यता वाले कैसे पैदा हो सकते हैं, उनकी संख्या कैसे बढ़ सकती है, क्योंकि यही विशेष जन ही तो धर्म समाज की वास्तविक, बहुत कीमती और नायाब धरोहर और पूंजी है! और ऐसे जनों

के बिना धर्म समाज नंग और कंगाल हो जाती है।

देव प्रभावों के वातावरण में बार-बार बैठकर आत्मिक परिवर्तन का विशेष क्रम वा सिलसिला आरम्भ होता है। सबसे पहले मोटे पाप वा नीच कर्म छूटते हैं। फिर मिथ्या विश्वास मिटते हैं। फिर कुछ अच्छी पूंजी होने की सूरत में एक-एक अधिकारी के भीतर सन्मान, श्रद्धा, कृतज्ञता, दया, हानि परिशोध जैसे उच्च भावों की पूंजी सतेज होती है। वह कुछ उच्च व्यवहार करने लगते हैं। सम्बन्धों में सुधार आता है। इससे आगे विशेष अच्छी पूंजी रखने वाले जनों को विशेष मात्रा में बार-बार देव प्रभावों के मिलते रहने से अपनी रूहानी बनावट दिखाई देने लगती है। अपने भीतर के भयानक आत्मिक रोग, नीच अनुराग और नीच घृणाएं दिखाई देने लगते हैं। साधारण सेवक तो उनके साथ समझौता करके ही जीवन व्यतीत करने लग जाते हैं। परन्तु कुछ विशेष अधिकारी जनों के भीतर देव प्रभाव अच्छी मात्रा में पहुंच कर उनके भीतर अपने नीच अनुरागों से बचने की इच्छा या फिकर पैदा कर देते हैं। इस इच्छा को ही आत्म हित की इच्छा कहा जाता है। जितनी यह इच्छा तीव्र होती है, उतना ही मनुष्य देव प्रभावों का चाहवान बन जाता है। जितना किसी के नीच अनुराग उस इच्छा को दबा देते हैं, उतना ही वह देव प्रभावों के प्रति उदासीन होता जाता है। आत्म हित की बहुमूल्य वा असाधारण इच्छा का भी गला घोंट देता है। सधारणत: मनुष्यों के नीच अनुराग प्रबल होकर वा उन पर अधिकार जमाकर इस इच्छा को दबा ही लेते हैं और साधारण सेवक फिर देव प्रभावों से भी उदासीन हो जाते हैं। इसलिए देव प्रभावों की प्राप्ति की योग्यता रखने वाले जनों काऔर भी आकाल पड़ जाता है।

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज का जीवन धर्म जगत के मुसाफिरों के लिए बहुत बड़ा सहायक है। देव प्रभावों की प्राप्ति की योग्यता के मार्ग में सबसे बड़ी रोग मनुष्य का अपना अंह अनुराग है। जो सौभाग्यवान जन श्रद्धेय श्रीमान जी का अनुकरण करके अपने अंह भाव का बोध प्राप्त करके, उससे निवृत होने के मार्ग पर पड़ जाते हैं, उनका निरंतर संग्राम उन्हें देव प्रभावों की प्राप्ति के योग्य बनाता जाता है। अपने संग्राम को विधिपूर्वक जारी रखकर अधिकारी आत्मा देव प्रभावों की प्राप्ति की अच्छी योग्यता प्राप्त कर लेते हैं। इस योग्यता को प्राप्त करके वह निज हित और परहित और समाज हित के योग्य बन जाते हैं। ऐसे मुबारक जन ही देव धर्म या धर्म समाज की बहूमुल्य धरोहर होते हैं। जितने ऐसे जन अधिक संख्या में पैदा हो जाएंगे, उतना ही वह धर्म समाज को अमीर, खुशहाल और महान बनाते जाएंगे समाज में जन और धन का आगमन बढ़ेगा। समाज का अधिकारी हृदयों के भीतर उच्च परिवर्तन का मुख्य कारज बढ़ेगा और विस्तृत होता जाएगा। सच्चे जन कल्याण और समाज कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता जाएगा।

देव धर्म के या धर्म समाज के महारथी जनों को, जिनके सिरों पर निज हित और समाज हित का बड़ा भारी उत्तरदायित्व है, वह तब ही अपने कर्तव्य को पूरा पालन कर सकेंगे, धर्म समाज को नंग और कंगाल होने से बचा सकेंगे, जितना वह देव प्रभावों की प्राप्ति की योग्यता रखने वाले अधिक से अधिक मात्रा में जन पैदा कर सकेंगे। ऐसा संग्राम, संघर्ष धर्म समाज को जिन्दा रखने के लिए अत्यन्त आवश्यक है। देव प्रभाव दायक साधन स्वयं करने और दूसरों को ऐसे देव प्रभाव दायक साधन करवाने की योग्यता में ही देव धर्म की सारी सम्पदा निहित है। इस योग्यता के बिना न कोई जन अपना सच्चा आत्मिक हित कर सकता है और न ही उस धर्म समाज की कोई सच्ची सेवा कर सकता है।

बलदेव सिंह

मृत्यु से जीवन की ओर

(श्री पी. वी.कनल)

मेरे भगवान्!

मैं इस समय आपकी सर्वोच्च अद्भुत ज्योति पर चिन्तन कर रहा हूं। जब मैं सोचता हूं कि मानव में एक या दूसरा सात्विक भाव उत्पन्न करने के लिए नेचर को कितने युग खर्च करने पड़े हैं, और फिर जब मैं देखता हूं कि नेचर को एक-एक ऐसे सात्विक भावधारी शिक्षक उत्पन्न करने में भी कितने युग लगे हैं, जो कि शिक्षक अन्य मनुष्यों में एक या दूसरा सात्विक भाग जागृत करते हैं, तो ऐसे सात्विक भावधारी जनों के दुनिया में प्रकट होने की महिमा और कीमत मुझे अनुभव होती है। परन्तु जब मैं देवात्मा के देवरूप के दर्शन करता हूं और उनकी ज्योति में देखता हूं कि न केवल उस रूप में सारे सात्विक भाव वर्तमान हैं, किन्तु उस रूप में देव शक्तियां भी विकसित हुई हैं, तो मैं बता नहीं सकता कि विकासकारी शक्तियों के इस अत्यन्त विस्मयजनक और शिरोमणि फल को सन्मुख लाकर मैं कितना विस्मित हो जाता हूं। ओह! नेचर को इन शक्तियों के पैदा करने में कितने लाखों और करोड़ों वर्ष लगे होंगे। मैं देखता हूं कि केवल एक कदम आगे बढ़ने में ही नेचर की विकासकारी शक्तियों को शताब्दियां लग जाती हैं। आप जैसे पूर्णांग आविर्भाव को आविर्भूत करने में तो नेचर ने हज़ारों लाखों कदम पार कर लिए! जब मैं नेचर के विकास क्रम के इस इतिहास का ध्यान करता हूं और यह सन्मुख लाता हूं कि अपने शिरोमणि फल-देवात्मा तक पहुंचने में इस विकास क्रम को कितनी चढ़ाईयां चढ़नी पड़ी हैं, तो मैं उसकी अद्वितीय महिमा और ऐसे आविर्भाव को अनुपम वरदान अनुभव किए बिना नहीं रह सकता। और नेचर के इस अद्वितीय उपहार की प्राप्ति पर सारी मानवता को मुबारकबाद दिए बिना नहीं रह सकता।

मैं भी नेचर का ही एक आविर्भाव हूं। परन्तु मैं अपने भीतर क्या पाता हूं? सारी मानवता की न्याईं मैं नीच अनुराग और नीच घृणाएं रखता हूं। और इस कूड़ा कर्कट में मेरे भीतर एक दो सात्विक शक्तियां भी हैं। मेरा आन्तरिक रूप और स्वभाव कितना हेच और कितना तुच्छ! प्राय: सारी मानवता का यही कंगाल और कृपापात्र रूप है। मानवता ऐसी हीन विरासत रखकर कोई संकल्प मात्र करने से अपना यह मूल आंतरिक स्वभाव नहीं बदल सकती। नीच अनुराग और नीच घृणाएं प्रबल शक्तियां हैं। यह खोखली बातों से मिट नहीं सकतीं और न ही उन मनुष्यों की अपने आपको धोखा देने और थोथी कल्पना के नशे में रह कर यह विश्वास करने से कि उन नीच शक्तियों का कोई अस्तित्व ही नहीं, या उनका हम पर कोई असर नहीं हो सकता। वह सचमुच की, और बहुत बलवान शक्तियां हैं। मनुष्य चाहे या न चाहे, वह मानवता पर शासन करती हैं, और अपने अनिवार्य फल-पाप, अपराध, नीच दुख और विश्वगत सम्बन्धों में महा भयानक अनमेल-पैदा करती हैं। ओह! काश हम अपने आत्मा का कंगाल और मोहताज रूप देख सकें और यह आत्मिक नीच शक्तियां जो घोर नर्क उत्पन्न करती हैं, उन्हें भी देख सकें।

तब और केवल तब हम अपना असीम सौभाग्य अनुभव कर सकते हैं कि हमें आपकी पूजा करने का महा अधिकार प्राप्त हो गया। मैं समझ नहीं सकता कि देवात्मा के सिवाए मानवता और किसकी पूजा करें? अपनी परम महान देव शक्तियों के कारण देवात्मा ही एकमात्र सत्य उपास्य देव हैं, जिनके और केवल जिनके देव प्रभाव ही हमें नीच अनुरागों और नीच घृणाओं के दासत्व और उससे उत्पन्न आत्मिक रोगों

से मुक्त कर सकते हैं, तथा हमारे आत्मा में ऐसी उच्च शक्तियां उत्पन्न कर सकते हैं जो आत्मा को सुन्दर और बलिष्ठ करती हैं।

भगवन्! इस समय मैं अपने अद्भुत सौभाग्य को अनुभव कर रहा हूं कि मैं आपके रूप के दर्शन करने, आपको पहचान लेने और आपको अपना परम उपास्य ग्रहण करने का अधिकारी बन गया। एक रुलते हुए बीज की न्याईं मेरे आत्मा ने अपने विकास की भूमि और परिस्थितियां प्राप्त कर ली हैं। काश मैं इस महा सौभाग्य को और भी गहराई और अमिट रूप से अनुभव कर सकूं।

आपके देव प्रभाव नए युग का निर्माण करेंगे

आपका आविर्भाव अद्वितीय है। आपके आत्मा में जो शक्तियां विकसित हुई हैं, वह संसार में सर्वथा नई हैं। आपका आदर्श सर्वथा नया है। आपकी शिक्षा बिल्कुल नई है। आपके देव प्रभाव जिस नमूने के इन्सान पैदा करेंगे, वह भी नए और अत्यन्त सौभाग्यशाली होंगे। आपके देव प्रभाव जब किसी अधिकारी आत्मा में प्रवेश करते हैं तो वह जो स्वर्गीय वरदान प्रदान करते हैं, वह यह हैं-

(1) वह हमारे दिल दिमाग से सब प्रकार के मिथ्या विश्वास, मिथ्या रस्म रिवाज और मिथ्या लक्ष्य आदि नष्ट कर देते हैं और खयाली भयानक अस्तित्वों के पीछे भागने और अपना जीवन बरबाद करने से हमें बचा देते हैं।

(2) वह हमें आत्मा का सच्चा जीवन्त और सीधा ज्ञान देकर हमें जीवन के ठीक पथ पर डाल देते हैं, जिसके फल स्वरूप उस दिशा में हमारा संग्राम सफल और सार्थक हो जाता है। हमारी उन्नति निश्चित हो जाती है।

(3) आपके प्रभाव हमें क्रमानुसार उन रोगी प्रवृतियों से और अभ्यासों या नीच अनुरागों और नीच घृणाओं से भी मुक्त करते हैं कि जो आत्मिक अन्धकार पैदा करते हैं, जो हमें विनाश का पथ अपनाने के लिए परिचालित करते हैं और जिनके कारण लाखों करोड़ों जनों के जीवन की किश्ती विनाश की चट्टान से टकरा कर चूर-चूर हो जाती है।

(4) आपके देव प्रभाव हमारे भीतर वह सात्विक या उच्च शक्तियां विकसति करने की सामर्थ्य रखते हैं जो कि हमें दीन और नम्रभावी, दुखियों के प्रति कोमल, जिनको सताया है-और हमने बहुतों को सताया है-उनके प्रति क्षमा याचक, उपकारियों के प्रति कृतज्ञ और सेवाकारी, विश्गत विविध सम्बन्धों, अस्तित्वों के लिए कर्त्तव्य परायण और अपने और दूसरों के हित का आकांक्षी बना देते हैं। इस प्रकार हे भगवन्! आपके देव प्रभाव हमें केवल नीच अनुरागों से ही मुक्त नहीं करते, हमें भरोसे के योग्य, कृतज्ञ, परोपकारी, अपनी स्वीकृति में सरल, दीनता पूर्वक अपने अपराधों को स्वीकार करने वाला, हानि परिशोध करने के लिए व्याकुल और जीवन में उन्नतशील भी बनाते हैं।

(5) वह हमें सच्चे अर्थों में अच्छे पुत्र, अच्छे पति, अच्छे, पड़ोसी, अच्छे नागरिक, अच्छे मनुष्य तथा पशुओं और पौधों के प्रति हितकर आदि आदि, बनाने की सामर्थ्य रखते हैं। अत: इस पृथ्वी पर हमारा सफ़र हमारे अपने लिए और दूसरों के लिए वरदान बन जाता है।

(6) वह हमारे भीतर जीवन के सच्चे और जीवन्त पथ पर आगे बढ़ने की भावना पैदा करते हैं। व्यक्ति और देश इसलिए बरबाद हो जाते हैं कि वह उच्च जीवन की उन्नतशील शक्तियां विकसित करने से रह जाते हैं। आपने उन्नतशील मनुष्यों की एक विचित्र नसल पैदा करने का बीड़ा उठाया है। यदि हमारे देश ने अब तक आपको पहचाना होता, तो उसका इतना हित होता कि जिसका अनुमान वह स्वप्न में भी नहीं कर सकते।

(7) आपके देव प्रभाव उच्च कोटि के प्रतिभाशील और ज्योतिर्मान विचारक पैदा करने की शक्ति रखते हैं, क्योंकि दिल और दिमाग सच्चाई के साथ-साथ ही उन्नत हो सकते हैं और आपके प्रभाव हमारे भीतर सच्ची बातों के लिए प्यार पैदा करते हैं। यह एक अनिवार्य नतीजा है कि सच्चाईयों और केवल सच्चाईयों के साथी बन कर हमारे दिल और दिमाग रोशन हो सकते हैं। केवल आपके देव प्रभाव ही सच्चे फ़िलासफ़रों, सच्चे कवियों, सच्चे लेखकों और प्रभावशाली पत्रकारों की एक शानदार नसल पैदा कर सकते हैं।

(8) वह इस पृथ्वी पर एक नई सभ्यता और नई संस्कृति और अद्‌भुत संस्थाओं को जन्म देंगे। आपके प्रभाव जिस नस्ल को पैदा करेंगे, उसमें व्यभिचार का निशान न होगा, न बेईमान जन होंगे, न चोर, नशई, मांसाहारी, जूएबाज़ होंगे, और न कोई किसी का कर्ज़ा या अमानत दबाएगा। सभ्यता की सीढ़ी में सबसे नीचे के स्थान पर भी चरित्रवान जन ही पाए जाएंगे और नीच अनुरागों और नीच घृणाओं के इलाज के लिए और उच्च भावों को विकसित करने के लिए बहुत सी संस्थाएं खुलेंगी। एक नए युग का निर्माण होगा।

जब मैं इन वरदानों और ऐसे ही अन्य वरदानों को सम्मुख लाता हूँ कि जो आपके देव प्रभावों के संचार होने से प्राप्त होंगे, तो मैं आपके देव रूप के साथ श्रद्धा सूत्र से जुड़ने की न केवल अपने लिये किन्तु सब अधिकारी आत्माओंके लिए नितान्त आवश्यकता अनुभव करता हूं।

स्वयं को जानना सबसे जरूरी

मनुष्य को हमेशा एक प्रश्न झकझोरता रहता है आखिर जीवन का कोई अर्थ है? जिसे हम जीना कहते हैं, वह चीज़ क्या है और क्या इससे भी परे कुछ है? इस नाम रहित चीज़ को खोजते रहने पर भी कुछ न पाकर हम किसी उद्धारक या आदर्श में आस्था पैदा कर लेते हैं। यह जाने बिना कि आस्था ही तो सारी हिंसा की जड़ है। सदियों से धर्माधिकारियों, संतों व ग्रंथों से हमें जो मिला, उस पर हम संतुष्ट होते रहे हैं। इसका सीधा अर्थ यह है कि हम शब्दों पर ही जाते हैं इसीलिए हमारा जीवन छिछला और खोखला होता चला गया। ऐसा कुछ भी तो नहीं, जिसे हमने अपने लिए खोजा हो।

इस पूरी प्रक्रिया को ध्यान से देखने के बाद स्वयं से ही प्रश्न पूछा जाता है कि क्या इस सबसे बिल्कुल भिन्न मार्ग नहीं हो सकता? क्या यह संभव नहीं कि हम अपने केंद्र से ही विस्फोट करें? दरअसल परंपरागत मार्ग को स्वीकार करना एक सबसे सहज तरीका हो गया है। यही कारण है कि कोई यदि हमें यह विश्वास दिला दे कि उसके पास जीवन जीने का एक आरामदेह नुस्खा है तो हम आंख मूंदकर उसके पीछे चलने को तैयार हो जाते हैं।

सच तो यह है कि सीखने की पहली चीज़ यही है कि खोजना कुछ नहीं है। जब हम खोजते हैं तो यह बिल्कुल वैसा ही होता है जैसे किसी दुकान में घूमते हुए सामान देख रहे हों और खरीदना कुछ नहीं हो। अत: हमारी समस्याओं का समाधान किसी के पास नहीं है, सिवाय हमारे। इसलिए स्वयं को जानना सबसे जरूरी है। इन जानने में ही बोध और प्रज्ञा का प्रारंभ है। कल रात तेज बारिश हुई और अब आकाश साफ हो रहा है। यह एक नया और ताजा दिन है। इस ताजा जीवन से हम इस तरह मिलें मानो अस्तित्व का यही एकमात्र दिन हो और पहली बार स्वयं को समझने की शुरूआत करें।

जे. कृष्ण मूर्ति

क्या औरत होना अभिशाप है?

औरत के लिए अबला, दलित, पैर की जूती सम्बोधन पुरुष प्रधान समाज के अंहकार को दर्शाते हैं। 8 मार्च को Woman Day मनाया जाता है। कुछ संवेदन शील लोगों ने अनुभव किया कि औरतों के अधिकारों के प्रति, समाज को जागृत करने के लिए कुछ प्रयास होना चाहिए। यह प्रयास अच्छा है, परन्तु इससे समाज की मानसिकता नहीं बदली जा सकती। आज भी औरतें अनगिनत प्रकार के जुल्मों की शिकार हैं। अपने परिवार की आर्थिक कमजोरी, बच्चों का मोह शादी के बाद उन्हें जुल्म सहन करने के लिए विवश कर देता है। इस प्रकार की दर्दनाक जिन्दगी सहने के कारण अधिकतर स्त्रियां यही सोचती हैं कि औरत होना ही एक अभिशाप है। अपने दुखों को देखते हुए वह भ्रूण हत्या जैसे पाप के लिए भी तैयार हो जाती हैं, यह सोचकर कि आगे मेरी बेटी को भी इन्हीं दुखों से गुजरना पड़ेगा।

औरतों की ऐसी कृपा पात्र अवस्था होते हुए भी मैंने सदा यह अनुभव किया है कि न केवल औरत होना अभिशाप नहीं बल्कि नेचर का बहुत बड़ा वरदान है। औरत को नेचर ने जिन गुणों से भरपूर किया है, वह बहुत कम पुरुषों में मिलते है। जो सृजनकर्त्ता है, जो जननी है, उसका जन्म अभिशाप कैसे हो सकता है! यह स्त्री ही है, जिसने फलोरिंस नाईटिंगेल, भक्त पूर्ण सिंह, सरवण कुमार, महात्मा गांधी आदि और कितने महापुरुषों को जन्म दिया है और उनकी ऐसी परवरिश की है कि वह समाज के हित के लिए कुर्बान हो गए।

सबसे बढ़कर शत-शत प्रणाम है उस मां को, उस जननी को जिसने परम पूजनीय भगवान देवात्मा, अध्यात्मिक जगत के सूरज को जन्म दिया।

बच्चे को नौ महीने अपने पेट में रखकर अपने खून की एक-एक बूंद से सींचकर, कठिन पीड़ा में से गुजरकर जन्म देना एक औरत के ही भाग्य में है। वह नन्ही जान जब मां की गोद में आती है, तो उसकी खुशी को कोई माप नहीं सकता, उसको कितना गर्व होता है कि बच्चे के एक-एक अंग की सृजनकर्त्ता वह है। उस गर्व में एक औरत ही सब तरह के जुल्म सहने की सामर्थ्य रखती है।

औरत में गजब की सहन शीलता होती है, जो दुख और पीड़ा शारीरिक तौर पर भी वह सह सकती है, वह पुरुष सहन नहीं कर सकते। जो पूरी-पूरी रात जागकर बच्चे की परवरिश करती है, फिर दिन भर परिवार की जिम्मेवारियों को पूरा करती है, उसका 100वां भाग भी पुरुष नहीं कर सकते। कुर्बानी, त्याग जो स्त्री के लिए साधारण होता है उससे उसकी आत्मा कितनी सशक्त बनती है, वह पुरुषों के भाग्य में नहीं।

घर गृहस्थी चलाने के लिए औरत पुरुषों से कहीं बेहतर है। उसमें कुशल प्रबन्ध के गुण हैं। वह 200 रू० में भी घर चला सकती है और 20,000 रू में भी। यह गुण पुरुषों में बड़ी-बड़ी डिगरियों से

नहीं आता। इसलिए संस्थाओं के प्रबन्ध में भी औरतों का प्रबन्ध पुरुषों से बेहतर होता है। यही नहीं कि यह गुण पढ़ी लिखी औरतों में होता है। ग्रामीण महिलाएं भी इसमें निपुण होती हैं। वर्ष 2006 में 14 अविकसित देशों में हुए सर्वे में यह बात सामने आई कि जहां भी ग्रामीण महिलाओं को कृषि वा ग्रामीण संसाधनों के उपयोग में मुख्य भागीदारी दी गई, उन स्थानों पर गरीबी वा भुखमरी कम हुई है। क्योंकि स्त्रियों में परिवारों को खुशहाल बनाने का गुण है।

घर गृहस्थी का निपुणता से बोझ उठाती महिला आर्थिक तौर पर भी पुरुष की सहयोगी बन गई है। कठिन परिश्रम उसकी रग-रग में होता है। सबसे पहले जागना, सब की आवश्यकताओं को पूरा करना, नौकरी से आकर फिर सब को सन्तुष्ट रखना यह गुण महिला में ही हो सकते हैं। उन्हें सिखाने की जरूरत नहीं पड़ती। महिला को इस मेहनत से गुजारने के लिए नेचर ने भी उसकी जीवनी शक्ति को इतना मजबूत बनाया है कि वह जन्म से ही कमज़ोर होकर भी जीवित रह जाती है, परन्तु एक कमजोर लड़के को पालना डाक्टरों के लिए भी समस्या बन जाता है।

सहनशीलता का गुण स्वभाविक ही औरतों में आ जाता है। बेशक पुरुष उनकी सहनशीलता का अनुचित लाभ उठाकर कई बार उन्हें प्रताड़ित करते हैं, परन्तु फिर भी इस अमूल्य गुण की धरोहर औरत के पास है।

साधारणत: और उन मोटे पापों से बची रहती है, जिनमें पुरुष डूबे दिखते हैं। पवित्रता उसका एक अमूल्य गहना है। कुछ गिणती को छोड़कर कोई स्त्री शादी के बाद पर पुरुष को कोई महत्व नहीं देती, परन्तु शादीशुदा पुरुषों के हाथों भी स्त्रियों की इज्जत सुरक्षित नहीं। मौका मिलने पर अच्छे चरित्रवान भी गिर जाते हैं।

इतने गुणों की मालिक औरत अबला कैसे हो सकती है? एक जननी, सृष्टि की रचनाकर्त्ता दलित कैसे हो सकती है। आवश्यकता है अपने गुणों को पहचानने की, अपने उचित अधिकारों को पाने की। सधारणत: बच्चे पिता की अपेक्षा मां को ही महत्त्व क्यों देते हैं, क्योंकि विधवा होकर भी एक मां छोटे से काम करके भी बच्चे पाल सकती है, परन्तु स्त्री का यदि देहान्त हो जाए तो पुरुष फौरन दूसरी शादी करके सौतेली मां की गोद में बच्चे डाल देते हैं, फिर वह उनके साथ कैसा व्यवहार करे, यह उनकी सिर दर्दी नहीं रहती। औरत कुर्बानी की मूर्ति है। इतने गुणों से सम्पन्न औरत परलोक में शायद इन्साफ पा सके क्योंकि वहां पर विधान पुरुष के हाथ में नहीं।

हर महिला का यह कर्त्तव्य है कि वह न केवल अपने गुणों को और निखारे बल्कि अन्याय के विरुद्ध खड़े होने की सामर्थ्य पैदा करे, तो औरत होना अभिशाप नहीं बल्कि वरदान है।

सुरजीत बराड़

कल्याण सत्संग से लाभ

श्री मान मनसा सिंह जी लिखते हैं :-

मैं अपने श्रद्धेय माता-पिता जी को प्रणाम करने वा शुभ कामना का साधन तो रोज़ाना करता ही था परन्तु उनके द्वारा पाये उपकार व उनके गुणों को कभी याद नहीं करता। न ही मुझे दिखाई ही देते हैं।

अपना नशुक़ापन व माता पिता के उपकार तो यहां कल्याण पहुँच कर माता-पिता दिवस की सभा में ही दिखाई देते है। भगवान देव आत्मा की देव ज्योति के बिना यह संभव ही नहीं है।

मुझे जन्म देने वाले पालन हार शिक्षा और सुरक्षा देने वाले अक्ल व शक्ल के दाता माता-पिता ही तो हैं। यहां तक कि अपनी सारी आयु की कमाई जमीन जायदाद मकान आदि भी मुझे दे गये। गुणों की पूंजी भी मुझे ही दे गये। सत्य बोलना इमानदारी व शाकाहारी भोजन भी उन्हीं की देन है। इतने उपकार पाकर भी उनके प्रति उपकार न करना यह मेरा नशुक़ापन है। यह मेरी नीचता है। जो यहां बैठे दिखाई दे रही है। अब मैं आज यहां पर प्रतिज्ञा कर रहा हूं कि जब तक मैं जीता रहूंगा तब तक अपने ऐसे उपकारी माता पिता के निमित हर माह कुछ दान करूंगा और उनके द्वारा पाये उपकारों को भी याद करूंगा कभी भुलाऊंगा नहीं।

एक बार मेरे पिता जी का किसी के साथ झगड़ा हो गया। कुछ दिनों के बाद उसने रात को छिप कर वार किया लाठी का, परन्तु अंधेरे से बचाव हो गया। चोट वगैरा साधारण लगी। सब की राये से पुलीस थाना में रिपोर्ट दर्ज करवाई गई। रिपोर्ट में सबने यह तह किया कि लाठी की जगह गंडासा या कोई हथियार लिखाया जाये। थानेदार ने यही कहा। परन्तु पिता जी अपनी सच्चाई पर कायम रहे और लाठी ही लिखवाई । मुकदमा हल्का हो या भारी, हक में हो या न हो, कुछ बने या न बने परवाह नहीं की, झूठ नहीं बोले। सच्चाई ही कायम रखी। यही सत्य बोलने का विरसा मुझे भी दे गये।

हम पाकिस्तान से हिन्दुस्तान में आये तो हमें राजस्थान के गंगा नगर में जमीन अलाट की गई।

जमीन देने की शर्त यह थी कि जमीन लेने वाला खुद जमीन काश्त करे, हिस्सा या ठेके पर जमीन देने वाले की जमीन वापस काट दी जावे।

चैंकिग करने के लिये बड़े अफीसर आये सब को बुलाया और पूछा गया कि सब स्वयं काश्त कर रहे थे। एक-एक से पूछा गया, सबने झूठ बोलकर अलाटमेंट पक्की करा ली। जब मेरे पिता जी से पूछा गया तो इन्होंने सत्य बोला कि काश्त करवा रहे हैं, स्वयं नहीं कर पा रहे हैं। यह सुन कर सब हंसने लगे कि अब इनकी जमीन कटेगी, इनको सत्य बोलने का फल मिलेगा। परन्तु हुआ उल्टा जमीन कटी नहीं अलाट की गई। अफ्सर खुश हुए कितनी बार घाटा सहन कर लेते परन्तु ईमानदारी नहीं छोड़ते। लाखों के सौदे करवाते थे। परन्तु दलाली का एक पैसा तक किसी से नहीं लिया। हमारे एक रिश्तेदार ने कुछ गलत काम किया। इस पर पिता जी ने साफ-साफ कह दिया कि अगर इसे जान से मार भी दिया जावे तो भी मैं इसका पक्ष नहीं करूंगा।

(4) हमारा काम पाकिस्तान में खेती बाड़ी का था। एक बार एक बैल की टक्कर से मेरे पिता जी की टांग की हड्डी टूट गई। सब ने राय दी कि मीट खाने से हड्डी जल्दी जुड़ेगी, शराब पीने से दर्द कम होगा। परन्तु मेरे पिता जी ने न तो मांस ही खाया और न शराब ही पी। इस प्रकार दुख सहन किया परन्तु मीट, शराब का प्रयोग नहीं किया। इस प्रकार मेरे श्रद्वेय पिता जी ने मुझे गुणों का भी विरसा दिया। हम पाकिस्तान से आये तो हमारा सब कुछ पाकिस्तान में ही छूट गया था। हम यहां आये तो खाने को कुछ नहीं था। मेरे बड़े भाई व मेरे पिता जी मेहनत मजदूरी करते और सब परिवार को खाना वगैरा खिलाते। बहुत ही कठिनाईयों मुसीबतों को काट कर हमें पाला, पढ़ाया, लिखाया। मेरी शादी की। इतने करने के बाद भी हमारे दुख से दुखी हो जाते। किसी अभाव को देख पूर्ति में लग जाते। ऐसे पालन हार मुझे हर समय सुखी देखने वाले माता-पिता को अगर भूल जाऊं तो फिर मेरे लिए धर्म कहां? मुझे धर्म कैसे प्राप्त हो सकता है? अंधकार ही बढ़ता जावेगा। कृतज्ञता से दूर ही होता जाऊंगा जो कि धर्म का मूल है। जब धर्म का मूल ही सूखा होगा तो धर्म जीवन रूपी वृक्ष कैसे हरा भरा हो सकता है। जो कि मेरे जीवन का लक्ष्य है। इस वर्ष 2007 से अपने श्रद्वेय माता-पिता की याद में अपने बड़े भाई व मासी जी व बुआ जी और मेरी बहन जी को विशेष सम्मान दूंगा और कुछ उपहार भी दूंगा। इस के अतिरिक्त सब संबंधों को धर्म मूलक संबंध बनाऊंगा। यह विशेष निधि खजाना मुझे कल्याण में आने पर मिला है।

मेरी शुभ कामना है कि इसी प्रकार कल्याण की सभाओं में सबका कल्याण हो जैसे कि मेरा हुआ है।

(मनसा सिंह)

श्री मधु सूदन जी लिखते हैं :-

इस सत्संग में बैठकर मेरा अपनी मां के तरफ ध्यान गया। जब श्रीमान जी एक ब्राह्मण युवक के बारे में बता रहे थे कि उसने माँ की चोटी इस तरह पकड़ कर घसीटा और बोला कि मैं तुम्हारे में बल नहीं रहने दूंगा। उस समय अपने ओर ध्यान गया कि अगर मुझे गुरु महाराज जी की शरण न मिली होती तो शायद मैं भी वैसा ही बेटा साबित होता। गुरु महाराज ने सेवाकारी माता पिता का रूप दिखाया व चाचा जी व अन्य बहुतों के उपकार दिखाए। मेरी माँ ने किस तरह मुझे पाला है, सालों साल मालिश करती रहीं। मेरे गाँव में अकाल पड़ गया था, उस समय घर में खाने के लिए दाने तक नहीं थे। चने उबाल कर पहले हमें देती थीं उसके बाद थोड़े बचते तो वो खाती थीं। केवल सब्जी बनाती थीं। तो पहले हमें खाने को देतीं फिर खुद खातीं। अपने तन पर फटे कपड़े डालतीं और मेरे लिए अच्छे कपड़े पहनातीं। कल्याण आने से माता पिता के प्रति नीचता की ओर बहुत ज़ोरदार ध्यान गया। श्रीमान जी की सभाओं से जाता रहा और नीच भावों को हिलाता रहा। हर बार अलग-अलग अनुभव होता है। अब की बार जहां ठहरे थे वो बहुत ही शांति प्रिय जगह थी। और हरबंस जी और उनके भाई जी, भतीजा जी सभी इस तरह सेवा करते रहे जिसका ब्यान नहीं कर सकते। मैं जब पांच बजे उठकर साधन में बैठा और गुरु महाराज से प्रार्थना की मुझे मेरी हालत दिखाओ हे भगवन इससे अच्छा मण्डल बना और ये महसूस हुआ कि सचमुच में कल्याण विशेष स्थान है, जहां पर साध न में बैठने पर अपनी तरफ ध्यान बार-बार जाता है, नहीं आने का घाटा पूरा नहीं किया जा सकता

सत्य देव की जय।

एक सेवक लिखते हैं

"सत् देव जी की जय"

कल्याण में सभी सभाएं बहुत प्रभावमयी व सुन्दर थी और सुन्दर भावों व ज्ञान एवं उच्च ज्ञान का भण्डार थी। धर्म की परिभाषा बताई गई और सच्चे धर्म के संगी, ईमानदारी, दयालुता, सहनशीलता, शुद्धता, शुक्रगुजारी, पश्चाताप आदि जिनकी व्याख्या बड़े सुन्दर शब्दों में श्रीमान जी द्वारा की गई।

"Paid in full for a glass of milk

जिसने शुक्रगुजारी की मिसाल कायम की सभा खत्म होने को जा रही थी। साथ-साथ सम्मान के योग्य श्रीमान् बलबहादुर जी ने शुक्रगुजारी और नाशुक्रापन में अन्तर स्पष्ट किये। एक सेठ की कहानी, मुशरफ की कहानी, औरंगजेब की कहानियों ने मुझ को सबसे अधिक प्रभावित किया। मुझ अंधे को, बे-सुधे को, आत्म अबोधी को, डींगे हांकने वाले को, नाशुक्रे को, नीच को, मेरी नाशुक्रगुजारी या नाशुक्रापन नजर आया जो एक घृणित पाप है। मेरी मैं व अंह ने मुझे श्रीमान बलदेव सिंह व अन्य धर्म सम्बन्धियों से अलग कर दिया। घर पर फरिश्तों जैसे - माता-पिता को न मानकर अपनी नीच क्रियाओं में जुटा रहा। माता पिता प्यारे व कोमल हृदयों वाले धर्म सम्बन्धियों ने मुझे क्या बनाने की कोशिश की, और क्या संग्राम कर रहे हैं। मैं बोझी, नीच निमाने ने कभी नहीं देखा। मेरे माता पिता ने क्या किया है, मेरे लिए मेरे धर्म सम्बन्धियों ने क्या किया है, कभी नज़र नहीं आया है, परिशोध करता-करता रो रहा हूँ। भगवान देवात्मा की कृपा हो गई, मुझ तुच्छ टीले पर उनके अमृत देव प्रभावों की वर्षा हुई। मुझे मेरा घटियापन नज़र आया, नाशुक्रापन नज़र आया, मुझ में नुक्स ही नुक्स हैं। धर्म का कोई भी गुण मुझ नीच में नहीं था पर भगवान देवात्मा ने मुझे मेरी नीचतायें दिखाई और जितनी योग्यता थी। सम्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रीमान बलबहादुर जी व मेरे धर्म सम्बन्धी व माता-पिता सुन्दर व फरिश्तों जैसे लगते है। मन करता है इनके पाक, पवित्र चरणों में बैठकर मेरी मलिनता दूर हो, मुझ बे-सुध को सुध मिले, आत्म बोध का ज्ञान हो, मेरी नीच-गतियां मिटें, इन सभी उपकारियों व परोपकारियों की मदद से उच्च व नेक इंसान बनूं, अब भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में किताबें भी पढ़ूंगा और श्रीमान बलदेव सिंह जी व श्रीमान बलबहादुर जी की सभी सभाएं सुना करूंगा। मेरे जोगिंदर सिंह (पम्मा जी) चाचा जी ने बताया कि श्रीमान बलदेव सिंह जी जैसे उच्च कोटि के प्रचारक नहीं मिलेंगे। और न ही कोई इन जैसा देव समाज धर्म के लिए संग्राम करेगा। सोचता हूँ, रोता हूँ इन फरिश्तों की लम्बी व दीर्घ आयु के लिए दुआ करता हूँ और उनके आशीर्वाद की तड़प है, जो सब भगवान देवात्मा की असीम कृपा से है।

तुच्छ सेवक

एक पुरानी सेविका लिखती हैं :-

विशेष सन्मान के योग्य श्रीमान जी,

बहुत-बहुत याद के साथ सत्यदेव की जय।

आप द्वारा भेजी जा रही दोनों पत्रिकाएं मुझे समय पर मिल रही हैं जिनमें आप तथा आदरणीय सुरजीत जी द्वारा लिखित लेख भगवार देवात्मा जी के उच्च प्रभाव पहुँचाने में विशेष कार्य कर रहे हैं। फरवरी मास की दोनों ही पत्रिकाओं के लेख मुझे विशेष ही महसूस हुए। Nature Bound है नेचर पर विश्वास करके तो देखें परन्तु मनुष्य प्रकृति उसकी कोई पेश नहीं जाने देती। बाकी सभी लेख भी बार-बार पढ़कर हृदय पर उतारने वाले हैं। मैं

नेचर की सहायकारी शक्तियों पर अपना विश्वास बनाने की चेष्टा करूँगी। दिसम्बर मास में प्रिय बहन जी से मिलने का अवसर हुआ जिन्हें मिलने की मेरी लम्बे समय से इच्छा थी। बचपन का काफी समय इकट्ठे रहने का अवसर मिला था। उसके बाद भी सत्संगों में मिलना होता रहा था जो अवसर अब नहीं मिल रहा है। मेरे जैसे पुराने धर्म सम्बन्धी इसे महसूस करते हैं। पर मैं तो इस कमी को बहुत बार महसूस करती हूँ।

आदरणीय सुरजीतजी को सत्य देव की जय उनकी ओर से की गई सेवा के लिए धन्यवाद। नेचर तथा देव समाज की कृपा से मेरी सेहत ठीक है।

कविता

अमृतसर पंजाब की धरती का हीरा
शानदार व्यक्तित्व का स्वामी
कुल गोत्र का नाम रोशन कर गया
मां को दिया वचन पूरा कर गया
दुनिया में नाम ऊंचा कर गया
मा पुत्र के जीवित हैं नाम
रहेगा रहती दुनिया तक उसका नाम
लूले लंगड़े अपाहिजों का मसीहा
लोग लाये सोना/धन पाकिस्तान से
लाया एक अपाहिज पीठ पर बिठा कर
अनाथालय एक निर्मित कर गया
स्वार्थ से मुक्त, परमार्थ पुरुष
मान सम्मान से विरक्त
प्रकृति का संतुलन स्थिर रखने को देता चेतावनी
खामोशी से काम करता चला गया
जीवन सफल कर गया।
बन गया मिसाल मशाल की मानिन्द जीता रहा
घर से बन्धा नहीं परिवार बनाया नहीं
रूखी सूखी खा कर करता रहा भला अपना वा औरों का
भगत पूर्ण नित्य न होते उत्पन्न
और कभी न मरते
रहते जीवित सदैव मरणोपरान्त भी।

विपन

धर्म का कैसा सम्मोहन

उत्तर भारत जब ठंड में ठिठुर रहा था तब लाखों लोग बर्फीली गंगा में अर्धकुंभ के मौके पर डुबकियां लगा रहे थे। धर्म के नाम पर अपने आप को कष्ट देना कोई नया नहीं है और केवल हिन्दुओं की ही बपौती नहीं हर धर्म वाला अपने भक्तों को उकसाता है कि वे धर्म का नाम ले कर कठोर और कठिन काम करें। कभी लाखों हज के नाम पर मक्का में जमा होते हैं जहां भीषण गरमी में झुलसते हैं, तो कभी पहाड़ों में छेद कर के मूर्तियां गढ़ते हैं।

धर्म किस तरह भगवान के नाम पर लोगों से अजीबो गरीब काम करा लेता है यह आश्चर्य है। यह आस्था का परिणाम नहीं, मानसिक सम्मोहन की सफलता है। जोखिम वाले काम आदमी हमेशा ही करता रहा है पर या तो खाना पाने के लिए या सुरक्षा के लिए। आदम युग में जब आग और भालों के अलावा उस के पास कुछ नहीं था, आदमी ने अपने से बड़े जानवरों का शिकार किया है। खाने की तलाश में मरुस्थल पार किए, बर्फ से ढकी चोटियों के बीच अपने घर बनाए।

पर जब न सुरक्षा का सवाल हो और न पेट का, यह कैसा सम्मोहन है जो धर्म के नाम पर लोगों को अपनी जान पर खेलने को तैयार कर लेता है।

असल में यह लंबे दिमाग की सफाई का नतीजा है। भूख और सुरक्षा के सवाल तो आदमी मां के पेट से सीख कर आता है और धर्म के चक्कर उसे पैदा होते ही घेर लेते हैं। हर धर्म वाला अपने भक्त के बड़े हो कर फैसले करने का इंतजार नहीं करता। उसे पहले ही दिन अंधभक्त बनाने में पंडे पुजारी लग जाते हैं। उसे कहा जाता है कि उस का अस्तित्व भगवान के कारण है और धर्म का प्रतिनिधि भगवान का विशेष दूत है जिस की बात माननी ही होगी।

इस तरह की दिमागी सफाई सामान्य जीवन में भी होती रहती है। बच्चों को तरह-तरह के जोखिम के काम सिखाने की कला मदारियों तक को आती है। सर्कस वाले आमतौर पर छोटे बच्चों को सिखाना शुरू कर देते हैं, चोरों के गिरोहों में बचपन से ही कठोर बनाने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। कितने ही समूह ऐसे हैं जिन में मानवीयता, सहृदयता और शराफत जैसे भाव बचपन से कुचल दिए जाते हैं। इन समूहों में धर्म की अंधभक्ति का सा प्रशिक्षण होता है।

इस का नुकसान यह है कि जो समाज जितना ज्यादा अंधभक्त होता है वह उतना ज्यादा कट्टर और जिद्दी होता है। यही नहीं वह किसी भी बदलाव को सहता नहीं है। जो लोग अपने को बदलने को तैयार होते हैं वे ही, कई बार केवल उत्सुकता या अपनी क्षमता जानने के लिए बहुत कुछ नया करते हैं। दुनिया में जो कुछ नया हुआ उसे उन्होंने किया जिन्होंने किसी धर्म का गुलाम बनने से इनकार कर दिया।

मजेदार बात यह है कि एक पीढ़ी में धर्म नए आविष्कार और नई खोजों को धर्मविरोधी मानता है पर अगली पीढ़ी में उस का उपयोग करने लगता है। लगभग हर धर्म ने अब इंटरनेट, सैटेलाइट व मोबाइलों का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है। धर्मों द्वारा चलाए जा रहे अस्पतालों में गर्भपात भी हो रहे हैं और दिल, आंख किडनी प्रत्यारोपण भी जो लोग अब स्टेम सैल शोध को आज भगवान विरोधी मान रहे हैं कल उस का इस्तेमाल धर्म प्रचार में करने लगेंगे।

धर्म के धंधेबाजों की खासीयत यह है कि वे आज अगर किसी बात को धर्मविरोधी कहते हैं तो कल बिला पलक झपकाए अपने मतलब के लिए अपना भी लेंगे।

शुभ संग्राम

6 मार्च को श्रीमान बलदेव सिंह जी चण्डीगढ़ से रवाना होकर शाम तक लुधियाना पहुँचे, वहां श्रीमान जगजीत सिंह जीत को गोदाम गिल चौंक पर मिले। उन्होंने अपना वायदा दान 2000 रू० दे दिए। समय की कमी के कारण अधिक नहीं रुके।

मोगा :– रात को श्रीमान अवतार सिंह जी के घर सभा की, जिसमें बताया गया कि सम्बन्धों में नरक स्वार्थ के कारण पैदा होता है। सम्बन्धों में श्रद्धा, कृतज्ञता व हमदर्दी के उच्च भावों से जुड़ना चाहिए। 250 रू० चन्दा अखबार मिला।

पदमपुर :– श्रीमान जी के पास मोगा में श्रीमान सीता राम जी भी पहुंच गए, और साथ ही पदमपुर गए। रास्ते से गोनियाना से ज्ञान चन्द भी शामिल हो गए। 4 बजे जगदीश जी के परिवार को चन्द मिन्ट मिलकर साथी सेवक बिशन सिंह जी का हस्पताल में पता लिया, वह कुछ बेहतर हैं। वहीं श्रीमान डा. मुनशा सिंह जी पार्टी के स्वागत के लिए पहुंच गए। सब साथी 6 बजे से पहले ही मन्दिर में पहुंच गए। रात 8.30 बजे सभा रखी। 2 जन गज सिंह से भी पहुंच गए थे।

इस सभा में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि मनुष्य को पशुओं की तरह यह पता नहीं कि मनुष्य जन्म पाकर दुनिया में करना क्या है। भाग दौड़ में ज़िदगी गुज़र जाती है। सुखों के आकर्षण घसीटे फिर रहे हैं। नाम जपने वा पूजा-पाठ से कुछ नहीं होता। मनुष्य को जीते रहने के लिए जीवन के कुछ नियम पूरे करने आवश्यक हैं। इन नियमों को जानना ही मनुष्य का लक्ष्य है, इन नियमों को न जानना जीवन बर्बाद करना है। यह सभा काफी प्रभावशाली थी।

8 मार्च सुबह 9 बजे सभा की गई। इसमें श्रीमान जी ने बताया कि पुराने पड़े हुए खेतों में खेती करने के लिए, उसमें झाड़ निकालने पड़ते हैं, तभी फसल सम्भव होती है। जीवन में से पाप और मिथ्या के झाड़फूस निकालकर ही धर्म की खेती सम्भव है। पाप संसार से क्यों नहीं गए, क्योंकि पापों को मिटाने वाला कोई आया ही नहीं। नाम जपाने वाले तो आए, परन्तु मिथ्या मिटाने वाला कोई नहीं आया। देवात्मा के देव रूप को मोटे तौर पर बताते हुए समझाया कि किस प्रकार देवात्मा पाप और मिथ्या का नाश करते हैं, उनके साथ जुड़कर हज़ारों का हित हुआ।

रात को 8.30 बजे एक और सभा की गई। इसमें श्रीमान बलदेव सिंह जी बताया कि मनुष्य पापों के सागर में गोते खा रहे हैं। उनकी बर्बादी से पूजा पाठ उन्हें बचा नहीं सकते। मनुष्य अपना शत्रु आप है, किसी धर्म में उसे इस तबाही से बचाने की सामर्थ्य नहीं। देवात्मा इस अवस्था से निकालते हैं। श्रीमान ज्ञान चन्द जी ने अपना परिवर्तन सुनाया, जिससे हाजरीन बहुत प्रभावित हुए। देवात्मा के आगे झुकने के लिए मजबूर हो गए। इस सभा से पहले श्रीमान बलबहादुर सिंह जी भी पहुंच गए थे। 2 जन राए सिंह नगर से भी पहुंच गए थे।

9 मार्च सुबह की सभा में 30-32 जन आ गए थे। इसमें बताया गया कि अन्धकार चार प्रकार का होता है। हम केवल रात के अन्धेरे को ही जानते हैं। अन्धकार का अर्थ दुःख, हानि और नाश। फिर धर्म के बारे में अन्धकार बताया गया। आत्मा वा जीवन सम्बन्धी अन्धेरा बहुत गहरा है और विश्वव्यापी है।

धर्म सम्बन्धी गुरु-पीरों के सम्बन्ध में अन्धकार, समझाया गया।

शाम की सभा :- श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई, इसमें 45-50 तक जन आकर शामिल हुए। इसमें बताया कि सुबह की सभा में जो अन्धेरा बताया गया, वह हमारे सुख अनुराग पैदा करते है। स्वार्थ सुख नाशुकरा ही नहीं बनाता, बल्कि कृतघ्न बनाकर जुल्म बरपा करता है। काम वासना के कीड़े किस प्रकार अथाह अनर्थ करते हैं। जितनी किसी नीच अनुराग की मात्रा अधिक होगी, उतना ही अन्धकार अधिक होगा। उच्च भावों के भीतर रोशनी होती है। ईमानदारी की रोशनी में दूसरों का हक नज़र आता हैं पवित्रता की रोशनी में काम वासना का अन्धकार नज़र आता है। शुक्रगुज़ारी की रोशनी में उपकारियों के उपकार नज़र आते हैं। श्रद्धा भाव की रोशनी में दूसरों का सुन्दर रूप नज़र आता है। देवात्मा का दर उच्च भाव उत्पादक सच्चा दर है। सभापति जी ने उदाहरणों द्वारा इस सच्चाई को पेश किया।

10 मार्च सुबह की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई, जिसमें बताया गया कि, कोई विश्वास, कोई धार्मिक अनुष्ठान, कोई चिन्ह धर्म नहीं होता, न कोई धर्म स्थानों की यात्रा ही धर्म है। वेश भूषा, धर्म नहीं। देवात्मा की देव बाणी पढ़कर सुनाई कि आत्मा की उच्च गति मूलक अवस्था ही धर्म है। देवात्मा के देव प्रभाव उच्च भाव पैदा करते है। उच्च भावों के बिना धर्म की गति नहीं हो सकती।

10 मार्च 2007 8.30 बजे की सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इसमें बताया गया कि नेचर नियम बद्ध है, इसमें कोई घटना अटकपच्चू नहीं होती। नेचर के चारों जगतों में जो भी भला या बुरा परिवर्तन होता है, वह नियमों के अनुसार होता है। नेचर के नियम अटल हैं, किसी का पक्षपात नहीं करती। मनुष्य ने नेचर के नियमों को जानकर ही इसका लाभ उठाया है। विकास की सारी गाथा इसकी पुष्टि करती है।

धन दौलत प्राप्त करने, सेहत बनाने, विद्या प्राप्त करने आदि सबके नियम हैं। जो बच्चा वर्षों तक अच्छे स्कूल नहीं जाता, तो वह अपना ज्ञान नहीं बढ़ा सकता, चाहे वह किसी ईष्ट देव की पूजा करता रहे। इसी प्रकार धर्म प्राप्ति के भी नियम हैं। लगातार धर्म की गतियां करके वा धर्म भावों को बढ़ाकर धर्म मिलता है। देवात्मा के देव प्रभाव अधिकारी आत्माओं में उच्च परिवर्तन पैदा करते हैं। श्रीमान सीता राम जी संगरूर ने अपना परिवर्तन सुनाया और तथ्य को स्पष्ट किया।

11 मार्च :- सुबह 9 बजे की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। सभापति जी ने बताया कि "पर हित भाव हृदय उपजाओ, धर्म मार्ग की दिग तब जाओ" धर्म पर हित के उच्च भाव से आरम्भ होता है। मनुष्य जो कुछ भी है, वह दूसरों के उपकारों का फल है। हमारा जन्म माता पिता का दान है, हम आप कुछ नहीं बन सकते थे। जो पालना, शिक्षा, अच्छे संस्कार हमें प्राप्त हुए हैं, वह सब माता पिता का दान है। इससे आगे अध्यापकों, डाक्टरों वा अन्य अनगिनत उपकारियों के सदके हमारा जीवन है। देव धर्म का वातावरण मनुष्य को उपकारियों के उपकार दिखाता है। शुक्रगुजारी पैदा करने की प्रेरणा करता है। नाशुक्रेपन का घृणित रूप दिखाता है। सभापति जी ने शुक्रगुजारी की हृदय को छूने वाली घटनाएं बताई। एक साहूकार गर्मी के मौसम में वृक्ष के नीचे बैठा, तो उसके उपकार उसे सामने आए, उसने वृक्ष मालिक को दो गुणी कीमत देकर वह वृक्ष खरीद लिया, इस शर्त पर कि वृक्ष उखाड़ना नहीं। कृतज्ञता की घटनाओं से सब बेहद प्रभावित हो रहे थे। देवात्मा की बाणी सुनाई :-

"जो जन उपकार पाकर प्रति उपकार नहीं

करता, वह हमारे निकट खुदगर्ज़, कमीना और पापी कहलाता है।"

शाम 5 बजे गंगानगर में डा. बिशन सिंह जी के सुपुत्र के घर सभा करवाई गई, यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। डा. मुन्शा सिंह जी ने सब को पहले ही सूचित कर दिया था। सभापति जी ने गुण चिन्तन और उपकार चिन्तन के विषय पर बहुत प्रभावशाली सभा करवाई आगे बताया कि आजकल positive thinking मनोविज्ञान में self culture का मुख्य धुरा माना जाता है। घर का मेल, घर का सुख, घर की तरक्की, घर का भविष्य सब उच्च दृष्टि कोण पर ही निर्भर है। समाज का विकास भी इसी नियम से होता है। देवात्मा सत्गुरु मनुष्य के घर के और समाज के हित के लिए अद्वितीय वातावरण पैदा करते हैं।

11 मार्च 8.30 बजे :- यह सभा भी श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। पंडित नेत राम जी द्वारा रचित भजन "गुरु दी शरण न आऊंदा, पाऊंदा दुख घनेरे मैं" गाया गया। देवात्मा के दर के मिलने से पहले पंडित नेतराम जी का जीवन पतन की अत्यन्त कृपा पात्र अवस्था तक पहुंच गया था, कि लोग उनसे घृणा करते थे, उनसे खौफ खाते थे, इस प्रकार वह विनाश की ओर बढ़ रहे थे। देवात्मा के देव प्रभावों से नेत राम जी के जीवन में आश्चर्यजनक परिवर्तन आया। पंडित जी पवित्रता की मूरत बन गए। परोपकारी बन गए। अनेक पक्षों में उनका जीवन ऊंचा उठ गया। लोग यह कहने लगे कि पंडित जी जीवन की हारी हुई बाजी जीत गए हैं। देवात्मा के देव प्रभाव मानव जगत के लिए वरदान हैं। और भी परिवर्तन की सुन्दर घटनाएं बताईं, जो प्रभावशाली थीं।

12 मार्च सुबह 9 बजे की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इस सभा में बताया कि मनुष्य की विद्या, बुद्धि, धन, शरीर और सब योग्यताएं नेचर की अमानत हैं। यह दूसरों के काम आने वाली हैं। जो मनुष्य अमानत में ख्यानत करता है, वह धर्म से दूर चला जाता है। विशुद्ध परोपकार वा सत्य और शुभ अनुरागों के लिए प्यार पैदा करने से मनुष्य धर्मवान बनता है, अपना जन्म सफल करता है।

यह सत्संग की आखरी सभा थी, सब सभाओं से हाजरीन ने अच्छा लाभ उठाया। कई जनों ने मांस अण्डे से और एक जन ने शराब से बचने की प्रेरणा हासिल की। सत्संग के लिए उपस्थित जनों ने आभार व्यक्त किया। गजसिंह पुरा से 7 सी.सी. से भी कुछ साथी आकर लाभ उठाते रहे। तीन सौ रुपये के लगभग किताबें इस सैंटर ने खरीदीं। बिना किसी प्रार्थना के हाजरीन ने 1420 रू० दान में दिए। डा. मनसा सिंह जी ने पार्टी की और बाहर से आए जनों की बहुत सेवा की। सबने पार्टी को सन्मान पूर्वक विदा किया। सहायकारी शक्तियों की कृपा से यह सत्संग काफी सफल रहा, उसके बाद श्रीमान ही केसूपुरा व सरसा के लिए रवाना हो गए।

केसूपुरा :- 12 मार्च को श्रीमान बलदेव सिंह जी ने रात को एक सभा की। इसमें 60-65 स्त्री पुरुष शामिल हुए। इस सभा में बताया गया कि मनुष्य की नीच सुखों की अनुरागी प्रकृति मनुष्य को भयानक पापों, जुल्मों और दुःखों में फंसाती है। मनुष्य के धर्म व धर्म गुरु उसे बचा नहीं सकते हैं। देवात्मा महा शक्तिशाली धर्म अवतार हैं, उन्होंने मनुष्य जगत की यह दुर्दशा देखी है और उन्हें पापों की कैद से छुड़ाने का काम कर रहे हैं। कितने ही उदाहरण परिवर्तन के सुनाए। श्रीमान गुरुदेव राज जी ने अपने माता-पिता वा भाई के साथ अन्मेल की अवस्था का ब्यान किया और बताया कि गुरु महाराज ने कैसे हमारे घर के अन्दर स्वर्ग पैदा किया है। उपस्थित जनों को भी गुरु महाराज को पहचानने की और उनकी शरण में

आने की अपील की।

13 मार्च :- सुबह 9 बजे सभा रखी गई, जिसमें 45 के लगभग जन शामिल हुए। इसमें बताया गया कि नेचर के दो रूप हैं, एक स्थूल और दूसरा सूक्ष्म। सूक्ष्म रूप को आक्सीजन, खुशबू, बदबू, ताप, ठण्ड, लेजर आदि के उदाहरण देकर समझाया गया। फिर देवात्मा के प्रभावों के कारज के विषय में समझाया गया। स्वामी गोबिन्द राज जी, श्रीमान बुद्ध राम जी के जीवन के भीतर आए परिवर्तनों द्वारा समझाया गया। देव रूप क्या है, उसके अद्वितीय प्रभाव क्या है, वह सारे संसार में कैसे दुर्लभ हैं, उनकी मनुष्य मात्र को परम आवश्यकता है, यह सब बातें समझाई गईं। गुरु महाराज के देव प्रभावों से बहुत सुन्दर वातावरण पैदा हुआ। कई हृदय पिघल रहे थे। आंसू बहा रहे थे। गुरु महाराज को धन्यवाद दे रहे थे और उनके आगे झुक रहे थे।

रात की सभा 8 बजे की गई, इसमें उपस्थिति 70-75 जनों की हो गई थी। इसमें बताया गया कि मनुष्य को उसकी रुचियां चलाती हैं और मनुष्य नीच रुचियों का दास होकर बर्बाद हो जाता है।

रुचि क्या होती है? यह बताया गया कि किसी सुख की लालसा को रुचि कहते हैं। नीच सुखों की रुचियां हैं, जैसे खाने पीने की रुचियां, नशों की, विषय वासनाओं की, धन के लालच की रुचियां, क्रोध , अंहकार, ईर्षा द्वेष, नीच घृणा की रुचियां मनुष्यों को बर्बाद कर देती हैं। उदाहरणों द्वारा समझाया गया। किस प्रकार पूजा, पाठ, जय-तप, नमाजों के होते हुए भी नीच रुचियां बढ़ती जाती हैं और मनुष्य के नाश का कारज बनती हैं। हम अपनी रुचियों को नहीं जानते और न ही देखते हैं। गुरु महाराज की ज्योति हमें हमारी रुचियां दिखाती है और उनका तेज हमें नीच रुचियों से छुड़वाता है, फिर हमारा भला करता है। इस सम्बन्ध में भी सच्चे उदाहरण पेश किए गए। सभा में सब जन बहुत ध्यान देकर सुनते रहे फिर जय ध्वनि के साथ सभा समाप्त की गई।

14 मार्च :- सुबह की सभा में 40-45 जन शामिल थे। इस में बताया कि धर्म क्या चीज़ है, इस बात का निर्णय धर्म नहीं कर सके। फिर बताया गया कि विश्वास, गुरु, देवी देवता, धर्म नहीं, वेशभूषा, पूजा की विधियां धर्म नहीं, तीर्थ भ्रमण वा स्नान करना धर्म नहीं। धर्म हृदय की, आत्मा की उच्च गति मूलक अवस्था का नाम है, वह उच्च भावों के पैदा होने वा बढ़ने से बनती है। उच्च भाव, विशेषकर शुक्रगुजारी के भाव को विस्तार पूर्वक समझाया गया। बहुत अच्छा मण्डल बना। एक सेवक ने अपने उपकारियों के उपकारों का वर्णन किया। सब ने गुरु महाराज को धन्यवाद दिया। उपस्थित जनों ने बहुत लाभ उठाया और गुरु महाराज के आगे झुकने का अवसर पाया।

रात की सभा में 90 के करीब जन थे। इसमें बताया गया कि गुरुओं देवी देवताओं के नामों के साथ करामातें जोड़ी गई हैं। इन करामातों के विषय में बताया गया कि यह केवल झूठ हैं। देवात्मा ने पापी जीवनों को बदलकर नेक बनाया है और सच्ची करामातें की हैं। कई आश्चर्य-जनक परिवर्तन सुनाए गए। फिर बताया गया कि धर्म सम्बन्धों में हैं, किस प्रकार बिगड़े हुए बच्चों को कैसे बदला है और श्रवण कुमार बनाया है। एक साथी सेवक ने मुक्त कण्ठ से सम्बन्धों में मिली बरकतों का ब्यान किया। एक जन ने अपनी एक हरिजन दाई के उपकारों को महसूस किया, जिस दाई ने उनको पाला था। उन्होंने गाँव में जाकर उनके चरणों में प्रणाम किया और कुछ भेंट देकर प्रणाम किया। सभा अच्छी प्रभावशाली हो गई। 100 के करीब हाजरी हो गई थी। 2 घण्टे तक शान्तमय वातावरण में सब सुनते रहे।

15 मार्च की सभा :- इसमें 70 के करीब

जन शामिल हुए। इसमें बताया गया कि पाप छोड़कर भी धर्म नहीं आता। धतूरे के पत्ते झाड़ने के बाद भी पेड़ धतूरे का ही रहता है। अपने लिए जीना जीवन बर्बाद करना है। Thy need is greater than mine. दाता जी की सेवाओं का वर्णन किया गया। 25 लड़कियों की शादियां अपने पैसे से करवाईं। आवश्यकता के अनुसार दूसरों को सामान देना देव धर्म है, बेशक यह दान किसी मन्दिर गुरुद्वारे को जाता हो, पूजा-पाठ करो या न करो। श्रीमान देवी चन्द जी जो दमड़ी नहीं दे सकते थे, चमड़ी दे सकते थे, उनकी कुल पूंजी दान में कैसे लग गई। इन्सान के पास उसका शरीर, दिमाग, विद्या, धन और धर्म सब नेचर की ओर से अमानत है। यह दूसरों के काम आए तब ही धर्म आवेगा। सभा के बाद कुछ जनों ने ब्यान किया। 2 जनों ने शराब छोड़ी। एक ने बीड़ी सिगरेट भी छोड़ी 600 रुपये दान में मिले। कुछ अखबार चन्दा से प्राप्त हुआ।

यहां से कुछ साथी सेवकों को लेकर श्रीमान जी सरसा पहुँच गए। अगले दो साथी सेवकों के साथ डबवाली गए। वहां मास्टर हंस राज जी को मिले। वहां के फूल पौधों को देखकर बहुत खुशी प्राप्त हुई। मन्दिर को सीवरेज का कनैकशन मिल गया है। सामने की सड़क को और चौड़ा बना दिया गया है, उससे मिट्टी आदि कम आने लगी है। मन्दिर की सफाई पर इसका बहुत प्रभाव पड़ेगा। वहां से जरूरी काम निपटाकर उक्त पार्टी रात तक कल्याण पहुंच गई।

कल्याण :- 16 मार्च की रात यहां सभा रखी गई। जिसमें लगभग सारे साथी सेवक पहुंच गए। सभा में बताया गया कि मनुष्य समाज के साथ जुड़कर भी बहुत कम लाभ उठाता है। केवल कुछ प्रतिशत जन ही लाभ उठाते हैं। पाप और मिथ्या से रहित होकर तृप्त हो जाते हैं। देवात्मा के दर से जो-जो मुख्य लाभ उठाने की जरूरत है, उसका ब्यान किया गया। ईतवार का साधन जरूर करने की प्रेरणा की गई।

अगली सुबह तीनों धर्म सम्बन्धी संगरूर पहुँचे। वहां मन्दिर में गए, साहित्य देखा। वहां से कुछ पुस्तकें ली और श्रीमान सीताराम जी को वहां सत्संग रखने के लिए प्रेरित किया। वहां से दोनों धर्म सम्बन्धी चण्डीगढ़ पहुंच गए।

चण्डीगढ़ :- 18 मार्च की ईतवार की सभा यहां की गई, जिसमें बताया गया कि मनुष्य किस प्रकार अपना गुलाम है। उस गुलामी को देवात्मा दिखाते हैं और दूर करते हैं। कुछ माता-पिता के Function की CD's वितरित की गईं।

एक सेवक

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, # 68, Shop No. 3, Badheri 41-D, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts